

नई दिल्ली में एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में कार्यरत उत्कृष्ट पेशेवरों को सम्मानित करने के लिए 'अटल स्वास्थ्य भूषण सम्मान 2019' के समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में
भाषण

21 दिसम्बर, 2019

एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर, नई दिल्ली

आज आप सबके बीच होना मेरे लिए बड़ी खुशी की बात है। सबसे पहले मैं 'अटल स्वास्थ्य भूषण सम्मान 2019' से नवाजे गए लोगों को बधाई देना चाहता हूँ। कोई भी पुरस्कार आपके अच्छे काम की प्रशंसा का प्रतीक होता है और इसे प्राप्त करने वाले को सम्मान देने के साथ - साथ दूसरों को प्रेरणा भी देता है।

जब किसी व्यक्ति के काम की सराहना की जाती है तो वह अधिकतम क्षमता एवं पूरे मनोयोग से काम करता है क्योंकि सराहना उसके लिए प्रेरणादायी बन जाती है और उसे बेहतर प्रदर्शन करने और समाज कल्याण के लिए काम करने का प्रोत्साहन मिलता है।

इस पुरस्कार को सेवरॉन फाउंडेशन ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री 'भारत रत्न' श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के नाम पर रखा, ये हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। श्रद्धेय अटल जी भारतीय राजनीति के शिखर पुरुष थे। उन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से न केवल व्यापक स्वीकार्यता और सम्मान प्राप्त किया बल्कि तमाम बाधाओं को पार करते हुए भारत को विकास के मार्ग पर ले जाने में अहम भूमिका निभाई।

साथियों, अच्छे स्वास्थ्य का महत्व हम सभी जानते हैं। कहा भी जाता है 'हेल्थ इन वेल्थ', 'जान है तो जहान है'। भारतीय परंपरा में इसीलिए स्वास्थ्य व चिकित्सा पर आरंभ से ही बल दिया गया है।

भारतीय चिकित्सा का लंबा इतिहास वैदिक काल से शुरू होता है। हम आयुर्वेद के चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रन्थों से परिचित हैं। आधुनिक चिकित्सा पद्धति ने हमारे देश में केवल कुछ सदी पहले ही कदम रखा है। लेकिन, आज हम गर्व से कह सकते हैं कि हमने विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित डॉक्टर-जनसंख्या अनुपात संबंधी लक्ष्य को हासिल कर लिया है। यह वास्तव में हमारे जैसे विशाल आबादी वाले देश के लिए एक सराहनीय उपलब्धि है।

हम इस बात पर गर्व कर सकते हैं कि हमारे देश के चिकित्सकों का स्तर अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है। लेकिन हमें ज़मीनी स्तर पर हमारी स्थिति भी देखनी होगी। अपने देश के लोगों को सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित कराने के लिए हमें अभी एक लंबा रास्ता तय करना है।

हमारे मेडिकल कॉलेजों ने समय की मांग के अनुसार इस ज़रूरत को पूरा करने में अपना योगदान दिया है और 31 मार्च 2019 की स्थिति के अनुसार भारतीय राज्य आयुर्विज्ञान परिषद् के रजिस्टर में लगभग साढ़े ग्यारह लाख से अधिक एलोपैथिक डॉक्टर पंजीकृत हैं।

हमारे देश में बड़ी संख्या में लोग ऐसी स्थितियों में रहते हैं जहां वह आसानी से संचारी रोगों के साथ – साथ बैक्टीरिया और वायरस के संक्रमण की चपेट में आ जाते हैं।

भारत सरकार राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों को लागू कर रही है। इससे संपूर्ण स्वास्थ्य देखभाल पर परिवार द्वारा अपने पास से व्यय को कम करने, संचारी, गैर-संचारी रोगों का उपचार करने में मदद मिलेगी। साथ ही, उभरती हुई बीमारियों और चोटों से होने वाली मृत्यु दर और रुग्णता को कम करने में, एनीमिया की रोकथाम और इसके निवारण इत्यादि में भी मदद मिलेगी।

हालांकि, लोगों में बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जागरूकता की कमी के कारण यह समस्या जटिल है। लोग प्रारंभिक चरणों में बीमारी की उपेक्षा करते हैं और जब तक उन्हें चिकित्सा की आवश्यकता का एहसास होता है, तब तक बीमारी बढ़ चुकी होती है।

इसलिए, गरीबों में बुनियादी स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा करना आवश्यक है। आप जैसे प्रतिबद्ध लोगों के सामूहिक योगदान से ही ऐसा संभव हो पाएगा।

रोकथाम इलाज से बेहतर होता है। आप जैसे पेशेवरों से आशा की जाती है कि जनता में स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से आप रोगों के रोकथाम के लिए भी अपना संपूर्ण योगदान देंगे। स्वच्छता के प्रति जागरूकता विकसित करना समय की मांग है जैसे कि शौचालय के बाद हाथ धोना, जूते/चप्पल का उपयोग करना, घर और आस-पास साफ – सफाई रखना ऐसी छोटी – छोटी सावधानियों से हम बड़ी - बड़ी बीमारियों से अपना बचाव कर सकते हैं।

भारत खुले में शौच से मुक्त (ओडीएफ) राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर हैं। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने इस मुद्दे पर प्रारंभ से ही विशेष बल दिया है। पूरे देश में शौचालय का निर्माण एक मिशन के रूप में किया जा रहा है। हमारे देश में अब स्वच्छता की संस्कृति का विकास तेजी से हो रहा है।

भारत में बड़ी आबादी गांवों में बसती है। वहाँ समुचित स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं हैं। हमारे ग्रामीण लोगों को इलाज के लिए पास के कस्बे या शहरों तक जाना पड़ता है। इसलिए, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच चिकित्सा सुविधाओं के इस अंतर को पाटना जरूरी है, ताकि लोगों को इलाज के लिए शहरों में जाना ना पड़े।

भारत वर्ष इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। वर्ष 2030 तक सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सामूहिक और संगठित प्रयास करने की जरूरत है। जैसा कि मैंने पहले कहा है कि निजी स्वच्छता और अपने आस-पास के क्षेत्र में सफाई रखने के संबंध में जागरूकता पैदा करना सबसे महत्वपूर्ण है।

हमें यह समझना होगा कि एक स्वस्थ देश बनाने के लिए फिटनेस को बढ़ावा देना बहुत महत्वपूर्ण है। किसी भी प्रकार का व्यायाम करने से आपको फिट रहने में मदद मिलती है।

आज लोग जीवन शैली से जुड़ी बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। ऐसा इसलिए हो रहा है कि हम अपनी परम्परागत खान-पान की आदतों को भूल गए हैं। आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में शारीरिक व्यायाम के लिए समय नहीं मिल पाता है।

हम तकनीक के इतने आदी हो गए हैं कि यदि हमारे पास थोड़ा सा भी खाली समय हो, तो हम उसमें शारीरिक व्यायाम करने की अपेक्षा गैजेट्स के साथ समय गुजारना पसंद करते हैं।

आज शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देने की आवश्यकता है और उसी विचार के साथ हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने 'फिट इंडिया मूवमेंट' की शुरुआत की है। हाल ही में, शारीरिक फिटनेस की आवश्यकता के संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए हमने संसद परिसर में फिटनेस डे का आयोजन किया था। स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन और मस्तिष्क का वास होता है और हमें इसी की आवश्यकता है।

यह सही है कि प्रगति करने के लिए हमें प्रौद्योगिकी की जरूरत है, लेकिन उसके लिए कुछ कीमत चुकानी पड़ती है। एक विकासशील देश के रूप में, विश्व में सम्मान पाने के लिए हमें कठिन परिश्रम करना होगा।

स्वाभाविक रूप से, दुनिया के साथ चलने में हमें समय लगेगा। लेकिन चुनौतियों के बावजूद भी हमने बहुत प्रगति की है। मुझे विश्वास है कि एक साथ मिलकर प्रयास करने से एक स्वस्थ देश बनाने की दिशा में हमें आसानी होगी, जो हमारी प्रगति के पथ को प्रशस्त करेगी।

मैंने यहां पुरस्कृत होने वाले डॉक्टरों की सूची देखी है और पाया है कि वे चिकित्सा के विविध क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उनको पुरस्कृत करके हम उन क्षेत्रों के अन्य चिकित्सकों का भी उत्साहवर्धन कर रहे हैं कि वे भी जन सेवा का एक माध्यम समझकर अपने मरीजों को बेहतर सेवाएं उपलब्ध कराएं।

मैं एक बार फिर पुरस्कार पाने वाले लोगों को बधाई देता हूँ और हेल्थकेयर तथा हाईजीन के क्षेत्र में डॉ. अभय कुमार और सेवरॉन फाउंडेशन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करता हूँ। मैं यहां उपस्थित सभी लोगों को उनके भावी प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

मुझे विश्वास है कि आप आगे भी इसी भाव एवं प्रतिबद्धता से मानव सेवा के पुनीत कार्य में लगे रहेंगे। आप कई और लोगो को भी इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेंगे और निश्चय ही हम "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः" के लक्ष्य पर पहुंचेंगे। जय हिन्द।
